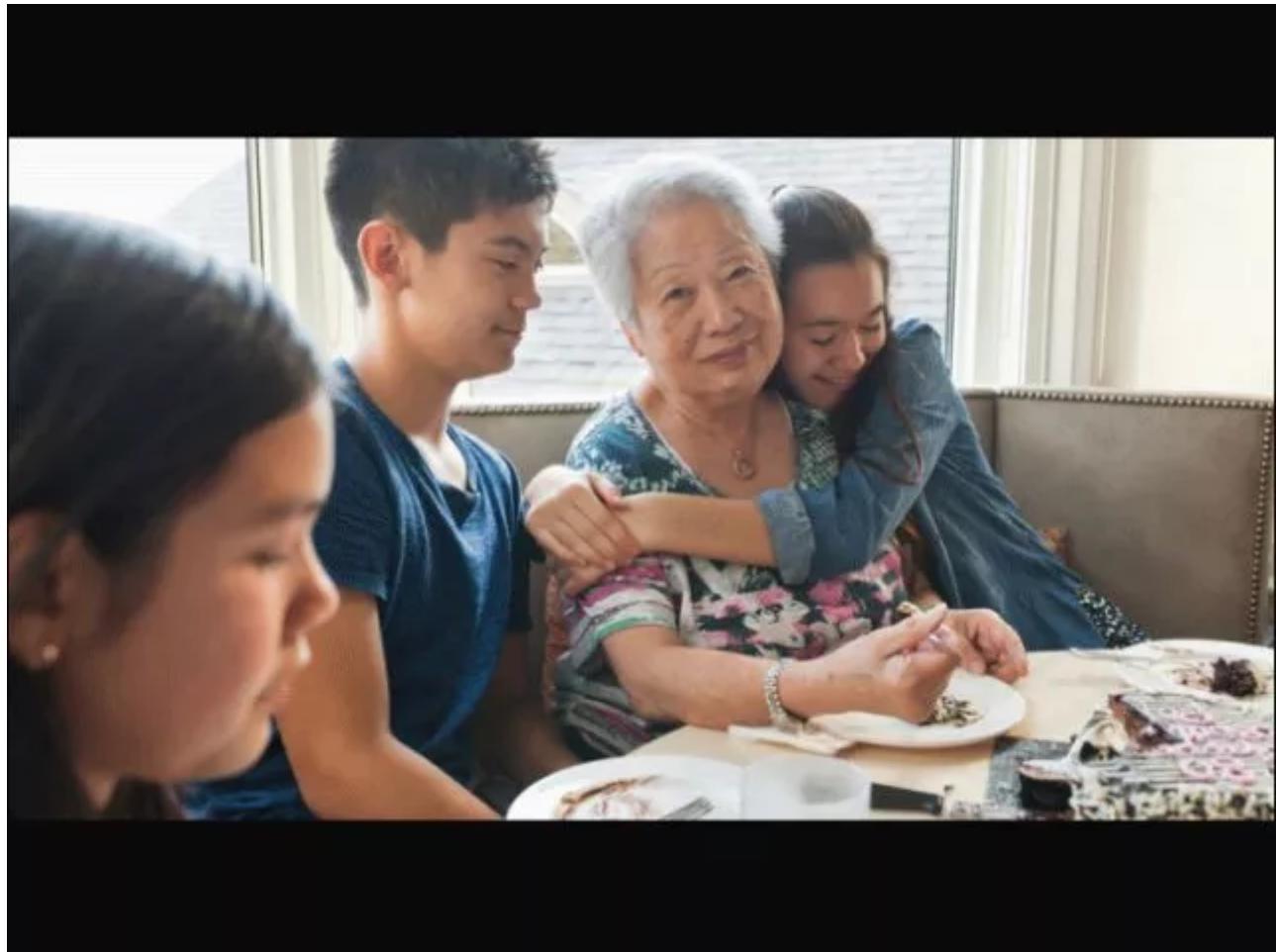


संबंधों को सकारात्मक सोच के साथ कैसे जी सकते हैं ऐसे जानें

By Rakesh Jha | नवभारतटाइम्स.कॉम | Published: Jul 17, 2021 09:50 am IST



मानवीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हुए हिंदी साहित्य में अनगिनत कहानियां और उपन्यास लिखे गये हैं। लेकिन इस विषय पर नॉन-फिक्शन किताबें कम ही रही हैं। आचार्य प्रशांत की 'संबंध' उन चंद किताबों में से एक है। यह किताब रोजमरा के संबंधों को मनोवैज्ञानिक नज़रिए से समझाने का प्रयास करती है।

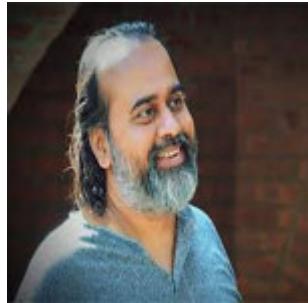
रिश्ते बनते कैसे हैं, उनमें भावनाओं का क्या स्थान होता है, किस तरह से रिश्ते को कैसे बेहतर समझा जा सकता है, मां-बेटे, प्रेमी-प्रेमिका इत्यादि संबंधों के अलावा भी कौन से संबंध होते हैं और उन्हें कैसे निभाया जा सकता है, ये कुछ बातें हैं जो यह किताब पाठकों को सिखाती हैं।

यह भी पढ़ें, पति पत्नी के बीच प्रेम बढ़ाने वाले 5 व्रत

किताब में 40 अध्याय हैं। एक अहम बात जो इस किताब से सीखने को मिलती है, वह है संबंधों में भावनाओं का स्थान। अध्याय नंबर 30, जिसका शीर्षक है 'संवेदनशीलता, भावुकता नहीं', पाठकों को भावना और संवेदनशीलता में भेद समझाता है। किस

तरह से भावनाओं पर आधारित एक रिश्ता अंततः दुःख देता है, इस बात को लेखक मनोवैज्ञानिक तरीके से सामने रखते हैं। लेखक प्रेम, ममता, अकेलापन, कामवासना जैसे गंभीर मुद्दों पर खुल कर बात करते हैं।

आज के जमाने में जहां संबंधों को लेकर लोग उलझ जाते हैं, रिश्तों में तालमेल बैठाने में लोगों को कई कठिनाइयां होती हैं और परिवार का ताना-बना उलझ जाता है। ऐसे में संबंधों को बेहतर बनाने का तरीका सीखने के लिए सकारात्मक सोच के साथ संबंधों को कैसा जीना चाहिए यह आप संबंध नामक इस किताब से सीख सकते हैं।



आचार्य प्रशांत

NBT
RELIGION

कैसा रहेगा आपका दिन
जानने के लिए राशिफल पाएं E-Mail पर।

Enter Your Email Id

SUBSCRIBE

अगली स्टोरी

सावित्री जिनकी बुद्धिमत्ता ने यमराज को भी किया पराजित

By gitika dubey | नवभारतटाइम्स.कॉम | Published: May 30, 2022 16:58 pm IST